

أَنْتَ بِسَلُومٍ ٥٣ وَذَكَرْنَاكَ الْذِّكْرَى تَنْفَعُ الْمُؤْمِنِينَ ٥٥ وَمَا

तुम पर कुछ इल्जाम नहीं⁵⁸ और समझाओ कि समझाना मुसलमानों को फ़ाएदा देता है और

خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْإِنْسَ إِلَّا لِيَعْبُدُونِ ٥٦ مَا أُرِيدُ مِنْهُمْ مِنْ رِزْقٍ

मैं ने जिन्न और आदमी इतने ही (इसी) लिये बनाए कि मेरी बन्दगी करें⁵⁹ मैं उन से कुछ रिज़क नहीं मांगता⁶⁰

وَمَا أُرِيدُ أَنْ يُطْعَمُونَ ٥٧ إِنَّ اللَّهَ هُوَ الرَّزَّاقُ ذُو الْقُوَّةِ الْمَتِينُ ٥٨

और न यह चाहता हूँ कि वोह मुझे खाना दें⁶¹ बेशक **اللَّهُ** ही बड़ा रिज़क देने वाला कुव्वत वाला कुदरत वाला है⁶²

فَإِنَّ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا ذُنُوبًا مِثْلَ ذُنُوبِ أَصْحَابِهِمْ فَلَا يَسْتَعْجِلُونَ ٥٩

तो बेशक उन ज़ालिमों के लिये⁶³ अज़ाब की एक बारी है⁶⁴ जैसे उन के साथ वालों के लिये एक बारी थी⁶⁵ तो मुझ से जल्दी न करें⁶⁶

فَوَيْلٌ لِلَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ يَوْمِهِمُ الَّذِي يُوعَدُونَ ٦٠

तो काफ़िरों की ख़राबी है उन के उस दिन से जिस का वा'दा दिये जाते हैं⁶⁷

﴿ آيَاتُهَا ٢٩ ﴾ ﴿ سُورَةُ الطُّورِ مَكِّيَّةٌ ٤٦ ﴾ ﴿ رُكُوعَاتُهَا ٢ ﴾

सूरए तूर मक्किय्या है, इस में उन्चास आयतें और दो रुकूअ हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

اللَّهُ के नाम से शुरूअ जो निहायत मेहरबान रहम वाला¹

وَ الطُّورِ ١ وَ كِتَابٍ مَسْطُورٍ ٢ فِي رَاقٍ مَنشُورٍ ٣ وَ الْبَيْتِ

तूर की क़सम² और उस नविशते की³ जो खुले दफ़्तर में लिखा है और बैते

58 : क्यूँ कि आप रिसालत की तब्लीग़ फ़रमा चुके और दा'वत व इर्शाद में जहदे बलीग़ सफ़ कर चुके और आप ने अपनी सई में कोई दफ़ीका उठा नहीं रखा। शाने नुज़ूल : जब येह आयत नाज़िल हुई तो रसूले करीम **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** ग़मगीन हुए और आप के अस्हाब को बहुत रन्ज हुवा कि जब रसूल **عَلَيْهِ السَّلَام** को ए'राज करने का हुक्म हो गया तो अब वह्य क्यूँ आएगी और जब नबी ने उम्मत को तब्लीग़ ब तरीके अतम फ़रमा दी और उम्मत सरकशी से बाज़ न आई और रसूल को उन से ए'राज का हुक्म मिल गया तो वक़्त आ गया कि उन पर अज़ाब नाज़िल हो, इस पर वोह आयते करीमा नाज़िल हुई जो इस आयत के बा'द है और इस में तस्कीन दी गई कि सिल्सिलए वह्य मुन्तकतअ नहीं हुवा है, सय्यिदे आलम **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** की नसीहत सआदत मन्दों के लिये जारी रहेगी, चुनान्चे इर्शाद हुवा **59** : और मेरी मा'रिफ़त हो। **60** : कि मेरे बन्दों को रोज़ी दें या सब की नहीं तो अपनी ही रोज़ी खुद पैदा करें क्यूँ कि रज़ाक मैं हूँ और सब की रोज़ी का मैं ही कफ़ील हूँ। **61** : मेरी ख़ल्क के लिये। **62** : सब को वोही देता वोही पालता है। **63** : जिन्हां ने रसूले करीम **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** की तक्ज़ीब कर के अपनी जानों पर जुल्म किया **64** : हिस्सा है नसीब है **65** : या'नी उममे साबिका (गुज़श्ता उम्मतों) के कुफ़र के लिये जो अम्बिया की तक्ज़ीब में उन के साथी थे उन का अज़ाब व हलाक में हिस्सा था **66** : अज़ाब नाज़िल करने की। **67** : और वोह रोज़े कियामत है। **1** : सूरए तूर मक्किय्या है, इस में दो **2** रुकूअ, उन्चास **49** आयतें, तीन सो बारह **312** कलिमे, एक हज़ार पांच सो **1500** हर्फ़ हैं। **2** : या'नी उस पहाड़ की क़सम जिस पर **اللَّهُ** तआला ने हज़रते मूसा **عَلَيْهِ السَّلَام** को शरफ़े कलाम से मुशरफ़ फ़रमाया। **3** : इस नविशते से मुराद या तौरैत है या कुरआन या लौहै महफूज़ या आ'माल नवीस फ़िरिशतों के दफ़्तर।

الْبَعُورِ ۴ وَالسَّقْفِ الْمَرْفُوعِ ۵ وَالْبَحْرِ الْمَسْجُورِ ۶ إِنَّ عَذَابَ

मा'मूर⁴ और बुलन्द छत⁵ और सुलगाए हुए समुन्दर की⁶ बेशक तेरे रब

رَبِّكَ لَوَاقِعٌ ۷ مَالَهُ مِنْ دَافِعٍ ۸ يَوْمَ تَتُورُ السَّمَاءُ مَوْرًا ۹ وَ

का अज़ाब ज़रूर होना है⁷ उसे कोई टालने वाला नहीं जिस दिन आस्मान हिलना सा हिलना हिलेगा⁸ और

تَسِيرُ الْجِبَالُ سَيْرًا ۱۰ فَوَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ۱۱ الَّذِينَ هُمْ

पहाड़ चलना सा चलना चलेंगे⁹ तो उस दिन झुटलाने वालों की खराबी है¹⁰ वोह जो

فِي خَوْضٍ يَلْعَبُونَ ۱۲ يَوْمَ يُدْعَوْنَ إِلَىٰ نَارٍ جَهَنَّمَ دَعًّا ۱۳ هَذِهِ

मशगले में¹¹ खेल रहे हैं जिस दिन जहन्नम की तरफ़ धक्का दे कर धकेले जाएंगे¹² यह

النَّارُ الَّتِي كُنْتُمْ بِهَا تُكْذِبُونَ ۱۴ أَفَسِحْرُ هَذَا أَمْ أَنْتُمْ لَا

है वोह आग जिसे तुम झुटलाते थे¹³ तो क्या यह जादू है या तुम्हें

تَبْصُرُونَ ۱۵ اصْلَوْهَا فَاصْبِرُوا أَوْ لَا تَصْبِرُوا سَوَاءٌ عَلَيْكُمْ إِنَّمَا

सूझता नहीं¹⁴ इस में जाओ अब चाहे सब करो या न करो सब तुम पर एक सा है¹⁵

تُجْرُونَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۱۶ إِنَّ السُّقْتِينَ فِي جَنَّتٍ وَنَعِيمٍ ۱۷

तुम्हें उसी का बदला जो तुम करते थे¹⁶ बेशक परहेज गार बागों और चैन में हैं

فَكَهَيْنَ بِمَا آتَاهُمْ رَبُّهُمْ وَوَقَهُمُ رَبُّهُمْ عَذَابَ الْجَحِيمِ ۱۸ كَلُوا وَ

अपने रब की देन पर शाद शाद¹⁷ और उन्हें उन के रब ने आग के अज़ाब से बचा लिया¹⁸ खाओ और

4 : बैतुल मा'मूर सातवें आस्मान में अर्श के सामने का'बा शरीफ़ के बिल्कुल मुक़ाबिल है, यह आस्मान वालों का क़िब्ला है, हर रोज़ सत्तर

हज़ार फ़िरिशते इस में तवाफ़ व नमाज़ के लिये हाज़िर होते हैं फिर कभी उन्हें लौटने का मौक़अ नहीं मिलता, हर रोज़ नए सत्तर हज़ार हाज़िर

होते हैं। हदीसे मे'राज में ब सिद्दह्त साबित हुवा कि सथियदे आ़लम صَلَّ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने सातवें आस्मान में बैतुल मा'मूर को मुलाहज़ा

फ़रमाया। 5 : इस से मुराद आस्मान है जो ज़मीन के लिये ब मन्ज़िला छत के है या अर्श जो जन्नत की छत है। (قرطبي من ابن عباس) 6 : मरवी है

कि **अवलّاه** तआला रोज़े क़ियामत तमाम समुन्दरों को आग कर देगा जिस से जहन्नम की आग में और भी ज़ियादती हो जाएगी। (ابن جرير)

7 : जिस का कुफ़फ़ार को वा'दा दिया गया है 8 : चक्की की तरह घूमेंगे और इस तरह हरकत में आएंगे कि उन के अज्जा मुख़ल्लिफ़

व मुन्तशिर हो जाएं। 9 : जैसे कि गुबार हवा में उड़ता है, यह दिन क़ियामत का दिन होगा। 10 : जो रसूलों को झुटलाते थे। 11 :

कुफ़ व वातिल के 12 : और जहन्नम के ख़ाज़िन काफ़िरों के हाथ गरदनो से और पाउं पेशानियों से मिला कर बांधेंगे और उन्हें मुंह के बल

जहन्नम में धकेल देंगे और उन से कहा जाएगा 13 : दुन्या में 14 : यह उन से इस लिये कहा जाएगा कि वोह दुन्या में सथियदे आ़लम

की तरफ़ सेह्र की निस्वत करते थे और कहते थे कि हमारी नज़र बन्दी कर दी है। 15 : न कहीं भाग सकते हो न अज़ाब से

बच सकते हो और यह अज़ाब 16 : दुन्या में कुफ़ व तक्ज़ीब 17 : उस के अ़ता व ने'मत व ख़ैरो करामत पर। 18 : और उन से कहा जाएगा।

اشْرَبُوا هَنِيئًا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿١٩﴾ مُتَكِبِينَ عَلَىٰ سُرُرٍ مَّصْفُوفَةٍ ۖ وَ

पियो खुश गवारी से सिला अपने आ'माल का¹⁹ तख्तों पर तक्या लगाए जो कितार लगा कर बिछे हैं और

رُؤُوسِهِمْ بِحُورٍ عِينٍ ﴿٢٠﴾ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَاتَّبَعَتْهُمْ ذُرِّيَّتُهُمْ بِإِيمَانٍ

हम ने उन्हें बियाह दिया बड़ी आंखों वाली हूरों से और जो ईमान लाए और उन की औलाद ने ईमान के साथ उन की पैरवी की

الْحَقْنَابِهِمْ ذُرِّيَّتُهُمْ وَمَا أَلْتَنَاهُمْ مِنْ عَمَلِهِمْ مِنْ شَيْءٍ ۚ كُلُّ امْرِئٍ

हम ने उन की औलाद उन से मिला दी²⁰ और उन के अमल में उन्हें कुछ कमी न दी²¹ सब आदमी अपने

بِمَا كَسَبَ رَهِيْنٌ ﴿٢١﴾ وَأَمَدَدْنَاهُمْ بِغَاكِهِتٍ ۖ وَلَحْمٍ مَّبَاشِشَتُهُنَّ ﴿٢٢﴾

किये में गिरफ्तार हैं²² और हम ने उन की मदद फरमाई मेवे और गोश्त से जो चाहें²³

يَتَنَازَعُونَ فِيهَا كَأْسًا ۖ لَا لَعْنُ فِيهَا وَلَا تَأْتِيْمٌ ﴿٢٣﴾ وَيَطُوفُ عَلَيْهِمْ

एक दूसरे से लेते हैं वोह जाम जिस में न बेहूदगी और न गुनहगारी²⁴ और उन के खिदमत गार

غُلَبَانٌ لَهُمْ كَانَهُمْ لُؤْلُؤًا مَّكْنُونٌ ﴿٢٤﴾ وَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ

लड़के उन के गिर्द फिरंगे²⁵ गोया वोह मोती हैं छुपा कर रखे गए²⁶ और उन में एक ने दूसरे की तरफ मुंह

يَتَسَاءَلُونَ ﴿٢٥﴾ قَالُوا إِنَّا كُنَّا قَبْلُ فِي أَهْلِنَا مُشْفِقِينَ ﴿٢٦﴾ فَنَّ اللَّهُ

किया पूछते हुए²⁷ बोले बेशक हम इस से पहले अपने घरों में सहमे हुए थे²⁸ तो **اللَّهُ** ने हम पर

عَلَيْنَا وَقِنَا عَذَابَ السُّوْمِ ﴿٢٧﴾ إِنَّا كُنَّا مِنْ قَبْلُ نَدْعُوهُ ۗ إِنَّهُ هُوَ

एहसान किया²⁹ और हमें लू के अज़ाब से बचा लिया³⁰ बेशक हम ने अपनी पहली ज़िन्दगी में³¹ उस की इबादत की थी बेशक वोही

19 : जो तुम ने दुनिया में किये कि ईमान लाए और खुदा और रसूल की ताअत इख्तियार की । 20 : जन्नत में, अगर्चे बाप दादा के दरजे बुलन्द

हों तो भी उन की खुशी के लिये उन की औलाद उन के साथ मिला दी जाएगी और **اللَّهُ** तआला अपने फज़लो करम से उस औलाद को

भी वोह दरजे अता फरमाएगा । 21 : उन्हें उन के आ'माल का पूरा सवाब दिया और औलाद के दरजे अपने फज़लो करम से बुलन्द किये ।

22 : या'नी हर काफ़िर अपने कुफ़्री अमल में दोज़ख के अन्दर गिरिफ्तार है । (٥٧:٢٢) 23 : या'नी अहले जन्नत को हम ने अपने एहसान से

दम ब दम मज़ीद ने'मते अता फरमाई । 24 : जैसा कि दुनिया की शराब में किस्म किस्म के मफ़ासिद थे क्यूं कि शराबे जन्नत के पीने से न अक्ल

जाइल होती है न खस्लते खराब होती हैं न पीने वाला बेहूदा बकता है न गुनहगार होता है । 25 : खिदमत के लिये और उन के हुस्न व सफ़ा

व पाकीज़गी का येह आलम है 26 : जिन्हें कोई हाथ ही न लगा । हज़रते अब्दुल्लाह बिन उमर (رضي الله تعالى عنهم) ने फरमाया कि किसी जन्नती

के पास खिदमत में दौड़ने वाले गुलाम हज़ार से कम न होंगे और हर गुलाम जुदा जुदा खिदमत पर मुकर्र होगा । 27 : या'नी जन्नती जन्नत

में एक दूसरे से दरयाफ़्त करेंगे कि दुनिया में किस हाल में थे और क्या अमल करते थे और येह दरयाफ़्त करना ने'मते इलाही के ए'तिराफ़

के लिये होगा । 28 : **اللَّهُ** तआला के खौफ़ से और इस अन्देशे से कि नफ़सो शैतान खलले ईमान का बाइस न हों और नेकियों के रोके

जाने और बदियों पर गिरिफ़्त किये जाने का भी अन्देशा था । 29 : रहमत और मरिफ़त फरमा कर । 30 : या'नी आतशे जहन्नम के अज़ाब

से जो जिस्मों में दाखिल होने की वजह से समूम या'नी लू के नाम से मौसूम की गई । 31 : या'नी दुनिया में इख़्लास के साथ सिर्फ़ ।

الْبُرِّ الرَّحِيمِ ٢٨ فَذَكَرْنَا أَنْتَ بِنِعْمَتِ رَبِّكَ بِكَاهِنٍ وَلَا مَجْنُونٍ ٢٩ ط

एहसान फ़रमाने वाला मेहरबान है तो ऐ महबूब तुम नसीहत फ़रमाओ³² कि तुम अपने रब के फ़ज़ल से न काहिन हो न मज्नून

أَمْ يَقُولُونَ شَاعِرٌ نَّتَرَبَّصُ بِهِ رَيْبَ الْمَنُونِ ٣٠ قُلْ تَرَبَّصُوا فَإِنِّي

या कहते हैं³³ यह शाइर हैं हमें इन पर हवादिसे ज़माना का इन्तिज़ार है³⁴ तुम फ़रमाओ इन्तिज़ार किये जाओ³⁵

مَعَكُمْ مِنَ الْمَتَرِبِّصِينَ ٣١ أَمْ تَأْمُرُهُمْ أَحْلَاهُمْ بِهَذَا أَمْ هُمْ قَوْمٌ

मैं भी तुम्हारे इन्तिज़ार में हूँ³⁶ क्या उन की अक़लें उन्हें येही बताती हैं³⁷ या वोह सरकश

طَاغُونَ ٣٢ أَمْ يَقُولُونَ تَقَوَّلَهُ ٣٣ بَلْ لَا يُؤْمِنُونَ ٣٤ فَلْيَأْتُوا

लोग हैं³⁸ या कहते हैं उन्होंने ने³⁹ यह कुरआन बना लिया बल्कि वोह ईमान नहीं रखते⁴⁰ तो इस जैसी

بِحَدِيثٍ مِثْلِهِ إِنْ كَانُوا صَادِقِينَ ٣٥ أَمْ خُلِقُوا مِنْ غَيْرِ شَيْءٍ أَمْ

एक बात तो ले आएँ⁴¹ अगर सच्चे हैं क्या वोह किसी अस्ल से न बनाए गए⁴² या

هُمْ الْخُلُقُونَ ٣٦ أَمْ خَلَقُوا السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ ٣٧ بَلْ لَا يُؤْقِنُونَ ٣٨ ط

वोही बनाने वाले हैं⁴³ या आस्मान और ज़मीन उन्होंने ने पैदा किये⁴⁴ बल्कि उन्हें यकीन नहीं⁴⁵

أَمْ عِنْدَهُمْ خَزَائِنُ رَبِّكَ أَمْ هُمُ الْمُضَيِّطُونَ ٣٩ أَمْ لَهُمْ سُلَّمٌ

या उन के पास तुम्हारे रब के खज़ाने हैं⁴⁶ या वोह कड़ोड़े (हाकिमे आ'ला) हैं⁴⁷ या उन के पास कोई ज़ीना है⁴⁸

32 : कुफ़फ़ारे मक्का को और उन के काहिन और मज्नू कहने की वजह से आप नसीहत से बाज़ न रहें, इस लिये 33 : यह कुफ़फ़ारे मक्का आप की शान में 34 : कि जैसे इन से पहले शाइर मर गए और उन के जथ्थे टूट गए येही हाल इन का होना है (مَعَادَ اللَّهِ) और वोह कुफ़फ़ार येह भी कहते थे कि इन के वालिद की मौत जवानी में हुई है इन की भी ऐसी ही होगी **اَللّٰهُ** तआला अपने हबीब से फ़रमाता है 35 : मेरी मौत का 36 : कि तुम पर अज़ाबे इलाही आए, चुनाच्चे येह हुवा और वोह कुफ़फ़ार बद्र में क़त्ल व कैद के अज़ाब में गिरिफ़तार किये गए। 37 : जो वोह हुज़ूर की शान में कहते हैं शाइर, साहि़र, काहिन, मज्नून। ऐसा कहना बिल्कुल ख़िलाफ़ अक़ल है और तुरां येह कि मज्नून भी कहते जाएँ और शाइर, साहि़र, काहिन भी और फिर अपने आक़िल होने का दा'वा 38 : कि इनाद में अन्धे हो रहे हैं और कुफ़फ़ारे तुग़यान में हद से गुज़र गए। 39 : या'नी सख़ियदे आलम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ने अपने दिल से 40 : और दुश्मनी व खुबसे नफ़स से ऐसे ता'न करते हैं **اَللّٰهُ** तआला उन पर हुज्जत काइम फ़रमाता है कि अगर उन के खयाल में कुरआन जैसा कलाम कोई इन्सान बना सकता है 41 : जो हुस्नो खूबी और फ़साहतो बलाग़त में इस के मिस्ल हो 42 : या'नी क्या वोह मां बाप से पैदा न हुए, जमादे बे अक़ल हैं जिन पर हुज्जत काइम न की जाएगी ? ऐसा नहीं या येह मा'ना हैं कि क्या वोह नुत्फ़े से पैदा नहीं हुए और क्या उन्हें खुदा ने नहीं बनाया ? 43 : कि उन्होंने ने अपने आप को खुद ही बना लिया हो, येह भी मुहाल है तो ला मुहाला उन्हें इक़ार करना पड़ेगा कि उन्हें **اَللّٰهُ** तआला ने पैदा किया, फिर क्या सबब है कि वोह उस की इबादत नहीं करते और बुतों को पूजते हैं। 44 : येह भी नहीं और **اَللّٰهُ** तआला के सिवा आस्मान व ज़मीन पैदा करने की कोई कुदरत नहीं रखता तो क्यूं उस की इबादत नहीं करते। 45 : **اَللّٰهُ** तआला की तौहीद और उस की कुदरत व ख़ालिक़ियत का, अगर इस का यकीन होता तो ज़रूर उस के नबी صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ पर ईमान लाते। 46 : नुबुव्वत और रिज़क़ वग़ैरा के, कि उन्हें इख़्तियार हो जहां चाहें खर्च करें और जिसे चाहें दें। 47 : खुद मुख़ार जो चाहें करें कोई पूछने वाला न हो। 48 : आस्मान की तरफ़ लगा हुवा।

يَسْتَعِينُ فِيهِ ۚ فَلْيَأْتِ مُسْتَبَعِهِمْ بِسُلْطٰنٍ مُّبِينٍ ۝۳۸ ۚ أَمْ لَهُ الْبَنَاتُ

जिस में चढ़ कर सुन लेते हैं⁴⁹ तो उन का सुनने वाला कोई रोशन सनद लाए क्या उस को बेटियां

وَلَكُمْ الْبَنَاتُ ۝۳۹ ۚ أَمْ تَسْأَلُهُمْ أَجْرًا فَهُمْ مِنْ مَّغْرَمٍ مُثْقَلُونَ ۝۴۰ ۚ أَمْ

और तुम को बेटे⁵⁰ या तुम उन से⁵¹ कुछ उजरत मांगते हो तो वोह चट्टी (तावान) के बोझ में दबे हैं⁵² या

عِنْدَهُمُ الْغَيْبُ فَهُمْ يَكْتَبُونَ ۝۴۱ ۚ أَمْ يُرِيدُونَ كَيْدًا ۙ فَالَّذِينَ

उन के पास गैब हैं जिस से वोह हुक्म लगाते हैं⁵³ या किसी दाउं (फ़रेब) के इरादे में हैं⁵⁴ तो

كَفَرُوا وَهُمْ الْبَكِيدُونَ ۝۴۲ ۚ أَمْ لَهُمْ إِلٰهٌ غَيْرُ اللَّهِ ۙ سُبْحٰنَ اللَّهِ عَمَّا

काफ़ि़रों ही पर दाउं (फ़रेब) पड़ना है⁵⁵ या अल्लाह के सिवा उन का कोई और खुदा है⁵⁶ अल्लाह को पाकी उन के

يُشْرِكُونَ ۝۴۳ ۚ وَإِنْ يَرَوْا كِسْفًا مِّنَ السَّمَاءِ سَاقِطًا يَقُولُوا سَحَابٌ

शिक से और अगर आस्मान से कोई टुकड़ा गिरता देखें तो कहेंगे तह ब तह

مَّرْكُومٍ ۝۴۴ ۚ فَذَرُهُمْ حَتَّىٰ يُلَاقُوا يَوْمَهُمُ الَّذِي فِيهِ يُصْعَقُونَ ۝۴۵ ۚ

बादल है⁵⁷ तो तुम उन्हें छोड़ दो यहां तक कि वोह अपने उस दिन से मिलें जिस में बेहोश होंगे⁵⁸

يَوْمَ لَا يُغْنِي عَنْهُمْ كَيْدُهُمْ شَيْئًا وَلَا هُمْ يُنصَرُونَ ۝۴۶ ۚ وَإِنَّ لِلَّذِينَ

जिस दिन उन का दाउं (फ़रेब) कुछ काम न देगा और न उन की मदद हो⁵⁹ और बेशक

ظَلَمُوا عَذَابًا دُونَ ذَلِكَ وَلٰكِنَّا أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ۝۴۷ ۚ وَاصْبِرْ لِحُكْمِ

ज़ालिमों के लिये उस से पहले एक अज़ाब है⁶⁰ मगर उन में अक्सर को ख़बर नहीं⁶¹ और ऐ महबूब तुम अपने रब के

49 : और उन्हें मा'लूम हो जाता है कि कौन पहले हलाक होगा और किस की फ़तह होगी अगर उन्हें इस का दा'वा हो 50 : येह उन की सफ़ाहत

और बे वुकूफ़ी का बयान है कि अपने लिये तो बेटे पसन्द करते हैं और अल्लाह तआला की तरफ़ बेटियों की निस्बत करते हैं जिन को बुरा

जानते हैं । 51 : दीन की ता'लीम पर 52 : और तावान की ज़ेरबारी के बाइस इस्लाम नहीं लाते, येह भी तो नहीं है फिर इस्लाम लाने में उन्हें

क्या उज़्र है ? 53 : कि मरने के बा'द न उठेंगे और उठे भी तो अज़ाब न किये जाएंगे, येह बात भी नहीं । 54 : दारुनद्वा में जम्अ हो कर

अल्लाह तआला के नबी हादिये बरहक صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ के ज़र व क़त्ल के मश्वरे करते हैं 55 : उन के मक्रो कैद का ववाल उन्हीं पर

पड़ेगा चुनान्चे ऐसा ही हुवा अल्लाह तआला ने अपने नबी صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ को उन के मक्र से महफूज रखा और उन्हें बद्र में हलाक

किया । 56 : जो उन्हें रोज़ी दे और अज़ाबे इलाही से बचा सके । 57 : येह जवाब है कुफ़र के उस मकूले का जो कहते थे कि हम पर आस्मान

का कोई टुकड़ा गिरा कर अज़ाब कीजिये अल्लाह तआला इसी के जवाब में फ़रमाता है कि इन का कुफ़रो इनाद इस हद पर पहुंच गया है कि

अगर इन पर ऐसा ही किया जाए कि आस्मान का कोई टुकड़ा गिरा दिया जाए और आस्मान से इसे गिरते हुए देखें तो भी कुफ़र से बाज़ न

आएं और बराहे इनाद (दुश्मनी की वजह) येही कहें कि येह तो अब्र है इस से हम सैराब होंगे । 58 : मुराद इस से नफ़ख़ए उला का दिन है ।

59 : गरज़ किसी तरह अज़ाबे आख़िरत से बच न सकेंगे । 60 : उन के कुफ़र के सबब अज़ाबे आख़िरत से पहले और वोह अज़ाब या तो बद्र

में क़त्ल होना है या भूक व क़हत् की हफ़्त सालह मुसीबत या अज़ाबे क़ब्र 61 : कि वोह अज़ाब में मुब्तला होने वाले हैं ।

رَبِّكَ فَإِنَّكَ بِأَعْيُنِنَا وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ حِينَ تَقُومُ ۗ وَمِنْ

हुकम पर ठहरे रहो⁶² कि बेशक तुम हमारी निगहदाशत में हो⁶³ और अपने रब की तारीफ़ करते हुए उस की पाकी बोलो जब तुम खड़े हो⁶⁴ और कुछ

الَّيْلِ فَسَبِّحْهُ وَإِدْبَارَ النُّجُومِ ۙ

रात में उस की पाकी बोलो और तारों के पीठ देते⁶⁵

﴿آياتها ٦٢﴾ ﴿سُورَةُ النَّجْمِ مَكِّيَّةٌ ٢٣﴾ ﴿رُكُوعَاتُهَا ٣﴾

सूरए नज्म मक्किय्या है, इस में बासठ आयतें और तीन रकूअ हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ जो निहायत मेहरबान रहम वाला¹

وَالنَّجْمِ إِذَا هَوَىٰ ۙ ۱ مَا ضَلَّ صَاحِبُكُمْ وَمَا غَوَىٰ ۙ ۲ وَمَا يَنْطِقُ عَنِ

इस प्यारे चमक्ते तारे मुहम्मद की कसम जब येह मे'राज से उतरे² तुम्हारे साहिब न बहके न बे राह चले³ और वोह कोई बात अपनी ख़्वाहिश से

الْهَوَىٰ ۙ ۳ إِنَّ هُوَ إِلَّا وَحْيٌ يُوحَىٰ ۙ ۴ عَلَّمَهُ شَدِيدُ الْقُوَىٰ ۙ ۵

नहीं करते वोह तो नहीं मगर वहुय जो उन्हें की जाती है⁴ उन्हें⁵ सिखाया⁶ सख्त कुव्वतों वाले ताक़त वर ने⁷

62 : और जो मोहलत उन्हें दी गई है इस पर दिलतंग न हो 63 : तुम्हें वोह कुछ ज़रर नहीं पहुंचा सकते । 64 : नमाज़ के लिये इस से तस्बीह उल्ला के बा'द "سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ" पढ़ना मुराद है या येह मा'ना हैं कि जब सो कर उठो तो अल्लाह तआला की हम्द व तस्बीह किया करो या येह मा'ना हैं कि हर मजलिस से उठते वक़्त हम्द व तस्बीह बजा लाया करो । 65 : या'नी तारों के छुपने के बा'द, मुराद येह है कि इन अवकात में अल्लाह तआला की तस्बीह व तहमीद करो, बा'ज् मुफ़स्सरीन ने फ़रमाया कि तस्बीह से मुराद नमाज़ है । 1 : सूरतुनज्म मक्किय्या है, इस में तीन 3 रकूअ, बासठ 62 आयतें, तीन सो साठ 360 कलिमे, एक हज़ार चार सो पांच 1405 हर्फ़ हैं, येह वोह पहली सूरत है जिस का रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ने ए'लान फ़रमाया और हरम शरीफ़ में मुशिरकीन के रू बरू पढ़ी । 2 : नज्म की तफ़सीर में मुफ़स्सरीन के बहुत से कौल हैं बा'ज् ने सुरय्या मुराद लिया है अगचें सुरय्या कई तारे हैं लेकिन नज्म का इत्लाक़ इन पर अरब की आदत है, बा'ज् ने नज्म से जिन्से नुज़ूम मुराद ली है, बा'ज् ने वोह नबातात जो साक़ नहीं रखते ज़मीन पर फैलते हैं, बा'ज् ने नज्म से कुरआन मुराद लिया है लेकिन सब से लज़ीज़ तफ़सीर वोह है जो हज़ुरते मुतर्जिमٌ قُدِّسَ سِرُّهُ ने इख़्तियार फ़रमाई कि नज्म से मुराद है जाते गिरामी हादिये बरहक सय्यिदे अम्बिया मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ की 3 (عَارَن) । 3 : صَاحِبُكُمْ से मुराद सय्यिदे आलम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ हैं, मा'ना येह हैं कि हज़ुरे अन्वर عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام ने कभी तरीके हक़ व हिदायत से उदूल न किया हमेशा अपने रब की तौहीद व इबादत में रहे, आप के दामने इस्मत पर कभी किसी अग्रे मकरूह की गर्द न आई और बे राह न चलने से येह मुराद है कि हज़ुर हमेशा रुशदो हिदायत की आ'ला मन्ज़िल पर मुतमक्किन रहे, ए'तिकादे फ़ासिद का शाएबा भी कभी आप के हाशियए बिसात तक न पहुंच सका । 4 : येह जुम्लए उल्ला की दलील है कि हज़ुर का बहक्ना और बे राह चलना मुम्किन व मुतसव्वर ही नहीं ब्यू कि आप अपनी ख़्वाहिश से कोई बात फ़रमाते ही नहीं जो फ़रमाते हैं वहुये इलाही होती है और इस में हज़ुर के खुल्के अज़ीम और आप की आ'ला मन्ज़िलत का बयान है, नफ़स का सब से आ'ला मर्तबा येह है कि वोह अपनी ख़्वाहिश तर्क कर दे । (किर) और इस में येह भी इशारा है कि नबी عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام अल्लाह तआला के ज़ात व सिफ़ात व अफ़ाल में फ़ना के उस आ'ला मक़ाम पर पहुंचे कि अपना कुछ बाकी न रहा तजल्लिये रब्बानी का येह इस्तीलाए ताम हुवा कि जो कुछ फ़रमाते हैं वोह वहुये इलाही होती है । (روح البیان) 5 : या'नी सय्यिदे आलम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ को 6 : जो कुछ अल्लाह तआला ने उन की तरफ़ वहुय फ़रमाया और इस ता'लीम से मुराद कल्बे मुबारक तक पहुंचा देना है । 7 : बा'ज् मुफ़स्सरीन इस तरफ़ गए हैं कि सख्त कुव्वतों वाले ताक़त वर से मुराद हज़ुरते जिब्रील हैं और सिखाने से मुराद ब ता'लीमे इलाही सिखाना या'नी वहुये इलाही का पहुंचाना है । हज़ुरते हसन बसरी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़रमाया कि "شَدِيدُ الْقُوَى دَوْمَرٌ" से मुराद अल्लाह तआला है उस ने अपनी ज़ात को इस वस्फ़ के साथ जि़क्र फ़रमाया, मा'ना येह हैं कि सय्यिदे आलम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ को अल्लाह तआला ने बे वासिता ता'लीम फ़रमाई । (تفسير روح البیان)